लेख

1

प्राथमिक शिक्षा में अवधारणा-कार्टून की उपयोगिता विद्यार्थियों के अधिगम के संदर्भ में

आकांक्षा शुक्ला*
अंजलि बाजपेयी**

जब कोई कार्टून, रंगीन चित्र या साधारण स्केच बच्चों को उनकी किताबों के नीरस अध्यायों के बीच या किसी अरुचिकर व्याख्यान के दौरान मिलता है, तो उनके चेहरे पर प्रसन्नता, हँसी व मुस्कुराहट सहज रूप से प्रदर्शित होती है तथा उन कार्टूनों और चित्रों से जुड़े कई सारे प्रश्नों के उत्तर जानने की उत्सुकता भी उनके चेहरे से प्रतीत होने लगती है। लगभग हम सभी ने अपने बचपन के दिनों में कॉमिक्स पढ़ने का आनंद लिया होगा। जब हम कॉमिक्स के कार्टून पात्रों के नाम याद करते हैं, तो उनके कार्य और कथन स्वतः ही दृश्य रूप में हम सभी के दिमाग में उभर आते हैं, जिससे हमें दृश्य और सामग्री को याद करने में स्वाभाविक रूप से सहायता मिलती है। कार्टून, बच्चों के साथ-साथ वयस्कों का भी ध्यान और रुचि बहुत आसानी से अपनी तरफ़ आकर्षित करते हैं इसलिए इन कार्टूनों को शिक्षा के पूर्व-प्राथमिक स्तर से उच्च स्तर तक शिक्षा प्रदान करने के लिए एक प्रभावी उपकरण के रूप में उपयोग किया जा सकता है, जिसका प्रमाण कई शोधकर्ताओं के शोध संग्रहण में मिलता है। वर्तमान अध्ययन का उद्देश्य, अवधारणा-कार्टून की उपयोगिता को प्राथमिक शिक्षा स्तर के विद्यार्थियों के अधिगम संबंधित कुछ पहलुओं को उजागर करना है। इसके साथ-ही-साथ इस अध्ययन का उद्देश्य कुछ ऐसे आयामों को भी प्रदर्शित करना है, जहाँ हम कार्टूनों को शैक्षणिक उपकरण के रूप में उपयोग कर सकते हैं जिससे विद्यार्थियों में उनके विचार, उनकी चिंतनशक्ति तथा उनकी समझ में बढ़ोत्तरी की जा सके।

प्राथमिक शिक्षा

प्राथमिक शिक्षा के विद्यालयों में साधारणत: 5 वर्ष से 11 वर्ष तक के बच्चों का नामांकन किया जाता है। बच्चे यहाँ आवश्यक बुनियादी कौशलों को सीखते हैं, जो उनकी आगे की शिक्षा के लिए नींव रखते हैं। विद्यार्थी अपनी प्राथमिक शिक्षा के दौरान जो भी कौशल सीखते और समझते हैं, उन कौशलों की छाप जीवन भर उनके मस्तिष्क में अमिट रहती है। प्राथमिक शिक्षा के दौरान कुछ बुनियादी कौशल, जैसे— पढ़ना, लिखना, वर्तनी, पारस्परिक संवाद, भाषा-कौशल और एकाग्रता बच्चों को सिखाए जाते हैं। ये बुनियादी कौशल विद्यार्थियों के भविष्य की शिक्षा तथा उनके जीविकोपार्जन के लिए उपयोगी सिद्ध होते हैं। डैनिअल तस्माजियन अपने शोध में लिखते हैं कि “Socialization Skills Acquired by Elementary School Children”, जिसका

*शोध छात्रा, शिक्षा संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
**प्रोफ़ेसर, शिक्षा संकाय, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय

आशय है कि समाजीकरण की योग्यता का शुरुआती विकास भी प्राथमिक शिक्षा की अवधि में ही होता है। डैनिअल तस्माजियन का कहना सही भी है, क्योंकि प्राथमिक विद्यालय ही बच्चों के लिए वो स्थान होता है, जहाँ वे अपने घर और पास-पड़ोस के लोगों के अलावा अपने हमउम्र बच्चों और शिक्षकों से मिलते हैं और उनके साथ सामाजिक वार्तालाप आरंभ करते हैं।

उपरोक्त विश्लेषण से हम ऐसे निष्कर्ष पर पहुँचते हैं जहाँ हम यह कह सकते हैं कि प्राथमिक स्तर पर बुनियादी कौशलों का विकास करना अत्यंत आवश्यक है। चूँकि बच्चों में कार्टून के माध्यम से दिखाई गई कहानी या पाठ्यवस्तु के प्रति उत्सुकता जागृत होती है और वे कार्टून के विभिन्न पात्रों के बारे में सोचना व बातें करना भी शुरू कर देते हैं, इसे ध्यान में रखते हुए यदि शिक्षकों द्वारा बुनियादी कौशलों के विकास में कार्टून का प्रयोग किया जाए तो अत्यंत सकारात्मक परिणाम देखने को मिलेंगे।

कार्टून

कार्टून का तात्पर्य व्यंग्य और हास्य रूप में बनाए गए या खींचे गए चित्र से होता है, जो किसी पत्रिका या समाचार-पत्र में ऑनलाइन या ऑफ़लाइन माध्यम से प्रकाशित किया जाता है। वर्तमान समय में कार्टून, सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक मुद्दों को प्रभावी ढंग से प्रदर्शित करने में अपना योगदान दे रहे हैं, इसके अलावा विभिन्न प्रकार के कौशलों, विषयों तथा जटिल संप्रत्यों को सिखाने के लिए कार्टून एक बहुत उपयोगी साधन के रूप में जाना जा रहा है। हास्य के उद्देश्य से खींचा गया कार्टून न केवल बच्चों का ध्यान और रुचि दोनों को आकर्षित करता है, अपितु रचनात्मक और आलोचनात्मक रूप से उनके विचार को प्रतिबिंबित करने में भी सहायता प्रदान करता है। क्रोएहनर्ट (1999) के अनुसार, "जब कार्टून का उपयोग किया जाता है, तो विद्यार्थी अपनी पार्श्व सोच (Lateral thinking) का उपयोग करने के लिए मज़बूर होते हैं, जो रचनात्मक तरीके से या 'बॉक्स के बाहर' सोचने की क्षमता है।"

अवधारणा-कार्टून

पहला अवधारणा-कार्टून स्थापित करने तथा उसको उपयोग में लाने का पूरा श्रेय केओघ और नायलर (1999) को जाता है। हालाँकि, केओघ और नायलर (1999) ने अवधारणा-कार्टून का शुरुआती प्रयोग विज्ञान विषय की कक्षा के लिए किया था। लेकिन बाद में अपने शिक्षण अनुभवों, शिक्षकों तथा विद्यार्थियों से प्राप्त प्रतिपुष्टियों तथा निरंतर अवधारणा-कार्टून की शिक्षा के विविध आयामों के लिए उपयोगिता पर किए गए शोधों के परिणामों के आधार पर अवधारणा-कार्टून में बहुत से सुधार और विकास करते गए। संक्षेप में, यह कहना बिलकुल गलत नहीं होगा कि अवधारणा-कार्टून दृश्य उपकरण की भाँति कार्य करते हैं, जो दो या दो से अधिक पात्रों के दैनिक जीवन में किसी विषय, घटना या अवधारणा पर विचारों के प्रस्ताव, विचारों पर चर्चा तथा सोच के आधार पर निर्मित होते हैं।

अवधारणा-कार्टून की मुख्य विशेषताएँ

अवधारणा-कार्टून की मुख्य विशेषताओं तथा उन्हें किस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है, का उल्लेख विभिन्न माध्यमों से उपलब्ध लेखों तथा शोध संग्रहण में मिलता है। यहाँ पर हम कुछ विशेषताओं को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझ सकते हैं—

1. अवधारणा-कार्टून में दो या दो से अधिक पात्र होते हैं।
2. अवधारणा-कार्टून दिन-प्रतिदिन की परिस्थितियों पर आधारित होते हैं।
3. अवधारणा-कार्टून में प्रत्येक परिस्थिति के लिए वैज्ञानिक रूप से स्वीकार्य वैकल्पिक दृष्टिकोणों के साथ-साथ अन्य दृष्टिकोण भी प्रस्तुत किए जाते हैं।
4. अवधारणा-कार्टून में लिखे हुए कथन बुलबुलों (Speech bubbles) के अतिरिक्त एक खाली कथन बुलबुला भी दिया जाता है, जिससे विद्यार्थी उस दिए गए खाली बुलबुले को भरने के लिए वैकल्पिक विचारों को खोजने और सोचने के लिए प्रोत्साहित व प्रेरित होते हैं।
5. अवधारणा-कार्टून के बुलबुलों में लिखे गए कथन विद्यार्थियों की भाषा में ही होते हैं, जिससे वे उन्हें आसानी से समझकर प्रयोग कर सकते हैं।
6. अवधारणा-कार्टून में दिए गए सभी वैकल्पिक दृष्टिकोण उचित दिखाई देते हैं, जिससे विद्यार्थी अपने दृष्टिकोण और विचार का कम आत्मविश्वास के साथ समर्थन कर पाते हैं, क्योंकि उन्हें सभी वैकल्पिक दृष्टिकोण सही प्रतीत होते हैं और वे सोच में पड़ जाते हैं।
7. अवधारणा-कार्टून में चेहरे की अभिव्यक्ति और कथन के शब्द सांदर्भिक संकेत देने वाले नहीं होते हैं, जिसके कारण विद्यार्थियों को उत्तर खोजने के लिए चिंतन करना पड़ता है।
8. अवधारणा-कार्टून में जो वैकल्पिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किए जाते हैं, वे विद्यार्थियों के विभिन्न आयु के विचारों के विषय में शोध आधारित होते हैं।

अवधारणा-कार्टून की उपयोगिता विद्यार्थियों के अधिगम के संदर्भ में

इस भाग में हम यह समझाने की कोशिश करेंगे कि विद्यार्थियों के अधिगम के संदर्भ में अवधारणा-कार्टून की क्या उपयोगिता है। यहाँ हम अवधारणा-कार्टून की मदद से कुछ विशेष कौशलों की विस्तारपूर्वक व्याख्या करने जा रहे हैं।

1. भाषा-कौशल— मानव प्रजाति को अपने भावों तथा सूचनाओं का आदान-प्रदान करने के लिए भाषा की समझ होना बहुत आवश्यक है। दूसरे शब्दों में, हम यह कह सकते हैं कि संपूर्ण विश्व के ज्ञान को जानने और समझने के लिए भाषा एक शक्तिशाली उपकरण है। यही कारण है कि हमारे देश के विभिन्न प्राथमिक विद्यालयों में मुख्य रूप से हिंदी, संस्कृत, उर्दू और अंग्रेज़ी भाषाओं की पढ़ाई-लिखाई करवाई जाती है और इन भाषाओं को समझाने और सिखाने पर ज़ोर दिया जाता है, जिनका उद्देश्य बच्चों की भाषा को समृद्ध और प्रभावी बनाना होता है। साधारणत: बच्चे अपने घर और पास-पड़ोस से मातृभाषा और दूसरी बोली जाने वाली भाषा को सुनते-सुनते बोलना तो सीख जाते हैं, लेकिन अपने विचार को शुद्ध भाषा में लिखने में उन्हें समस्या आती है। अपनी भाषा को शुद्ध रूप से न लिख पाने, न समझ पाने तथा न बोल पाने की वजह से उन्हें आगे के विद्यालयी स्तर पर तर्क-वितर्क करने, सोचने तथा अपने विचारों को व्यवस्थित रूप से प्रस्तुत करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इस प्रकार हम यह कह सकते हैं कि भाषा कौशल में निपुणता अति आवश्यक है। भाषा-कौशल के विकास के संदर्भ में सज़ाना (2018) ने अपने शोध परिणाम में पाया कि अवधारणा-कार्टून के माध्यम से अंग्रेज़ी भाषा के बोलने और लिखने की प्रगति में

सहायता मिली। गैमेज (2019) ने भी अपने अंग्रेज़ी भाषा कौशल से संबंधित शोध परिणाम में पाया कि अधिकांश छात्र कार्टून से संबंधित सौंपे गए कार्य में सक्रिय रूप से शामिल होते हैं और एक व्यापक तथा विवादास्पद विवरण देते हैं। इस तरह हमें इस बात का प्रमाण मिलता है कि भाषा कौशल का विकास करने में अवधारणा-कार्टून बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। जब बच्चों के सामने रंगीन चित्रों से सुसज्जित पाठ्यपुस्तक रखी जाती है, तो वे उसका अवलोकन बहुत बारीकी से करते हैं और आपस में चित्रों के बारे में बातचीत भी करना शुरु कर देते हैं। किसी बच्चे द्वारा चित्र बनाना तथा उस चित्र का अर्थ समझना उस बच्चे के भाषा-विकास का एक प्रारंभिक स्तर हो सकता है। गैमेज (2019) का मानना था कि अवधारणा-कार्टून विद्यार्थियों के बोलने के कौशल को सुविधाजनक बनाता है और विद्यार्थियों को उनके सहपाठियों के साथ आपसी संबंध में भी सुधार करता है। यही कारण है कि गैमेज (2019) के शोध निष्कर्ष के अनुसार लगभग 70 प्रतिशत विद्यार्थियों ने कक्षाओं में कार्टून के उपयोग के प्रति सकारात्मक धारणा का प्रदर्शन किया और यह सकारात्मक प्रदर्शन शिक्षण और सीखने के अनुभव को बेहद सुखद, उत्तेजक और यादगार बनाने में अहम भूमिका निभा पाया। रंगीन चित्रों के द्वारा बच्चे अपने शब्द-भंडार में वृद्धि करते हैं, किसी समस्या को तर्कसंगत रूप से हल करने में सक्षम होते हैं तथा अभिव्यक्ति के विकास में सहायता की स्वीकृति प्राप्त करते हैं। इसकी पुष्टि चित्र 1, 2, 3, 4, 5 तथा 6 से भी होती है। चित्र 1 और 2 में बच्चे पौधों के भोजन से संबंधित जानकारी साझा कर रहे हैं एवं चित्र 3 और 4 में बच्चे पानी की उपयोगिता के संदर्भ में चिंतित दिखाई पड़ रहे हैं। चित्र 2 तथा चित्र 4 से यह स्पष्ट होता है कि विद्यार्थी, अवधारणा-कार्टून की मदद से वार्तालाप करके अपनी भाषा कौशल का विकास कर रहे हैं।

2. रचनात्मक मूल्यांकन— रचनात्मक मूल्यांकन विभिन्न प्रकार के तरीकों को संदर्भित करता है, जो शिक्षक द्वारा एक पाठ, एक इकाई या एक पाठ्यक्रम के दौरान विद्यार्थियों की समझ, उनके सीखने की ज़रूरतों तथा उनकी शैक्षणिक प्रगति के इन-प्रोसेस मूल्यांकन करने के लिए उपयोग करते हैं। चीन और टियो (2009) ने पाया कि अवधारणा-कार्टून का उपयोग रचनात्मक मूल्यांकन के संदर्भ में स्वयं और साथियों, दोनों के आकलन के लिए किया जा सकता है।

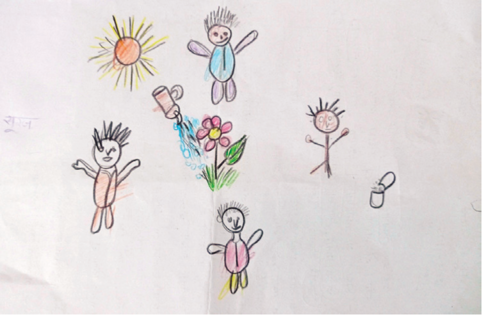

चित्र 1

चित्र 2

चित्र 3

चित्र 4

अवधारणा-कार्टून की विशेषताओं के क्रम में ये बात उजागर होती है कि जब विद्यार्थियों के समक्ष कार्टून के पात्रों को संवाद करते हुए दिखाया जाता है, तो वे स्वयं को एक ऐसे स्वतंत्र और खुशनुमा वातावरण में होने का अनुभव करते हैं, जहाँ वे स्वयं के विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए उत्साहित महसूस करते हैं। ऐसी स्थिति में शिक्षकों द्वारा उनके ज्ञान का मूल्यांकन कर पाने में सहायता मिलती है। जैसा कि चित्र 5 से स्पष्ट होता है कि जब एक कक्षा में शिक्षक ने विद्यार्थियों से कोरोना वायरस के संबंध में चर्चा की तथा उनसे यह जानने की कोशिश की कि कैसे वे अपने आपको इस वायरस से बचा सकते हैं, तो इसके समर्थन में बच्चों की रचनात्मक क्रियाविधि से शिक्षक को उत्साहित करने वाले निष्कर्ष देखने को मिले, जिससे इस बात को बल मिलता है कि अवधारणा-कार्टून, विद्यार्थियों के रचनात्मक मूल्यांकन प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

चित्र 5

3. गलत धारणाएँ— एक गलत धारणा का अभिप्राय एक ऐसे विश्वास, एक ऐसे दृष्टिकोण या एक ऐसी राय से है, जो गलत है। कोलिंस संक्षिप्त अंग्रेज़ी शब्दकोश (Collins Concise English Dictionary) 1988 के अनुसार, मिसकंसेप्शन का अर्थ है, 'गलत या गलत दृष्टिकोण, राय या रवैया'। विद्यार्थियों के दृष्टिकोण को जानने के साथ-साथ, उनकी सोच तथा उनकी राय को विकसित करने के लिए कॉसेप्ट कार्टून एक मूल्यवान उपकरण हैं। सामान्यत: विद्यार्थी आसानी से कार्टून से जुड़ जाते हैं और आपस में चर्चा व संवाद करते हुए अपने विचारों को सही ठहराने का प्रयास करते हैं तथा उपयुक्त तर्कों का निर्माण करते हैं। ज़्यादातर स्थिति में विद्यार्थी इसकी पहचान करने लग जाते हैं कि कौन-सी गलत धारणा उनके दिमाग

में है और ये भी जान पाते हैं कि स्वयं की उनकी समझ कितनी सीमित है। उस स्थिति में शिक्षक अपना विषय पढ़ाते समय विद्यार्थियों की गलत अवधारणा को सही करने हेतु कार्टून की मदद लेते हैं और विद्यार्थियों को गलत अवधारणा को सही करने का अवसर प्रदान करते हैं।

चित्र 6

इकिसी और अन्य (2007) ने भी अपने शोध में यह पाया कि अवधारणा-कार्टून विद्यार्थियों की समझ और उनकी गलत धारणाओं की पहचान कराने में सक्षम होते हैं। इसकी पुष्टि योंग और की (2017), कुसुमनिंग्रम और अन्य (2018) भी अपने शोध में करते हैं और यह पाते हैं कि अवधारणा-कार्टून की सहायता से विद्यार्थियों की बहुत सारी गलत अवधारणाओं में कमी लाई जा सकी। कुछ शोधकर्ताओं के अध्ययन निष्कर्षों ने भी यही संकेत दिया कि यदि अवधारणा-कार्टून वर्कशीट के रूप में या पोस्टर के रूप में विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत किए जाएँ, तो उनमें गलत धारणाओं को दूर किया जा सकता है और उनके वैज्ञानिक विचारों को समझा भी जा सकता है।

चित्र 7

इस तरह हम यह कहने में सक्षम हो पाते हैं कि गलत अवधारणाओं की जाँच करने और उन्हें सुधारने में अवधारणा-कार्टून बहुत ही व्यावहारिक उपकरण हैं। इस पक्ष में हम देखते हैं कि चित्र 6 में विद्यार्थियों के बीच सूरज और तारों की रोशनी तथा उनकी आपसी स्थिति को लेकर गलत दृष्टिकोण बना हुआ है, जिसे एक पात्र (विद्यार्थी) ने स्पष्ट करने की कोशिश की है। चित्र 7 में विद्यार्थियों के बीच गणित के योग संक्रिया और गुणा संक्रिया के आपसी संबंध को लेकर चर्चा हो रही है। चित्र 7 में एक पात्र के गलत समझ या दृष्टिकोण को अन्य पात्रों ने स्पष्ट करने की कोशिश की है। चित्र 6 एवं 7 से यह साफ़ प्रदर्शित होता है कि अवधारणा-कार्टून से शिक्षक को अधिक प्रभावी ढंग से विद्यार्थियों की अवधारणा को स्पष्ट करते हुए उसमें परिवर्तन करने में सहायता मिलती है।

4. ध्यान बढ़ाने व व्यस्त रखने में— कक्षा के सभी विद्यार्थी एक-दूसरे से भिन्न होते हैं। सभी के सीखने की क्षमताएँ व तरीके अलग-अलग होते हैं। कुछ विद्यार्थियों में संवेगात्मक और व्यवहारगत समस्याएँ भी होती हैं, जिसके कारण उन्हें ध्यान देने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है। अतः शैक्षणिक विधियों के साथ-साथ विद्यार्थियों का ध्यान आकर्षित करने वाली तकनीकों का उपयोग करना अति आवश्यक

हो जाता है। इस संदर्भ में बच्चों का ध्यान आकर्षित करने और बनाए रखने के लिए कार्टून का उपयोग किया जा सकता है। अरुनराज और ब्लेसी (2015) ने अपने शोध कार्य द्वारा यह स्पष्ट किया है कि अवधारणा-कार्टून के माध्यम से विशेष आवश्यकता (ADHD— अटेंशन डेफ़िसिट हाईपरएक्टिविटी डिसऑर्डर) वाले विद्यार्थियों को उनके व्यक्तिगत या युग्मित कार्य में रचनात्मक रूप से व्यस्त रखा जा सकता है। परिणामस्वरूप यह उनके रचनात्मक अधिगम, उनके सहकारी और सहयोगी अधिगम में सहायक सिद्ध होते हैं। कार्टून के माध्यम से विचारों को भी उत्तेजित किया जा सकता है, जिससे उच्च क्रम में संज्ञानात्मक कौशल, रुचि और चिंतनशील कौशल का भी विकास होता है। शिक्षाविदों के अनुसार, विद्यार्थियों के सर्वांगीण शैक्षणिक विकास के संदर्भ में कार्टून एक सक्षम उपकरण हैं, क्योंकि ये समझ, ध्यान और रुचि बढ़ाने, सीखने के प्रति प्रेरणा में सुधार करने, दृष्टिकोण में सुधार करने, उत्पादकता में वृद्धि करने, रचनात्मकता और अलग सोच को विकसित करने, चिंता और तनाव को कम करने, सक्रिय भागीदारी बढ़ाने तथा सीखने की प्रक्रिया में विद्यार्थियों के ऊबन और व्यवहार विकारों को कम करता है।

5. अनौपचारिक अधिगम व्यवस्था— अनौपचारिक शिक्षा का आशय ऐसी शिक्षा से होता है, जहाँ समाचार-पत्रों, इंटरनेट सामग्री तथा जनसंचार के माध्यम से विद्यार्थियों में ज्ञान और कौशल का प्रसार किया जाता है, और इसीलिए अनौपचारिक शिक्षा नियमित न होकर अनियमित रूप से दी जाती है। इस प्रकार की शिक्षा में कक्षाओं तथा उनकी पाठ्यपुस्तकों का योगदान न के बराबर होता है। अनौपचारिक शिक्षा में जब अवधारणा-कार्टून सकारात्मक रूप से प्रभावित करने लगें तो विद्यार्थियों के लिए एक ऐसी व्यवस्था स्थापित हो जाती है, जहाँ विद्यार्थियों का अधिगम तो होता है, लेकिन उनके ऊपर कक्षा तथा पाठ्यक्रम से संबंधित किसी प्रकार का दबाव नहीं होता है। जिसके फलस्वरूप विद्यार्थियों में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उन सभी कौशलों का विकास संभव हो पाता है, जिसकी चर्चा ऊपर के भागों में हमने की है। चित्र 1 से 7 तक में हमने देखा कि अवधारणा-कार्टून दिन-प्रतिदिन की परिस्थिति पर आधारित होते हैं और इन परिस्थितियों का अवलोकन विद्यार्थी अनौपचारिक संसाधनों के माध्यम से भी करते हैं। चूँकि, इस विषय में कार्य करने वाले कार्टून में संवाद चरित्रों के द्वारा किए जाते हैं, इसलिए विद्यार्थियों की अधिगम व्यवस्था को मज़बूत करना आसान हो जाता है। अंत में हम ऐसे निष्कर्ष पर पहुँचते हैं, जहाँ हम यह प्रभावी रूप से कह सकते हैं कि अवधारणा-कार्टून कक्षा में एक अनौपचारिक अधिगम व्यवस्था का निर्माण करता है, जिससे विद्यार्थी और शिक्षक दोनों लाभान्वित होते हैं।

6. कक्षा-प्रबंधन की समस्या में— कक्षा प्रबंधन शैक्षणिक और प्रशासनिक गतिविधियों का संगठन है, जो कक्षा में विद्यार्थियों के लिए एक उत्तम अधिगम के वातावरण की स्थापना के लिए आवश्यक है। कक्षा प्रबंधन, कक्षा में शिक्षण-प्रक्रिया के समय आने वाली उन सभी बाधाओं को समाप्त करना है, जिससे विद्यार्थियों के अधिगम में खलल पड़ता है तथा यह सुनिश्चित करना है कि विद्यार्थियों का कोई व्यवहार और विचार उनकी रुचि और ध्यान को अधिगम के दौरान विचलित न करें। इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु शिक्षक, शिक्षण गतिविधियों की योजना बनाते हैं तथा कक्षा में प्रभावी और कुशल समय का उपयोग करते हुए विद्यार्थियों की भागीदारी सुनिश्चित करते हैं। इसके

अतिरिक्त कक्षा प्रबंधन में उपयुक्त कक्षा, उपकरणों का चयन और उनका उपयोग किया जाना भी कक्षा प्रबंधन की समस्या को किसी हद तक सुलझाने में मदद करता है। कराहान और कागानाका (2017) के अनुसार, अवधारणा-कार्टून निम्न प्रकार से कक्षा प्रबंधन में सहायक हो सकते हैं—

- अवधारणा-कार्टून दैनिक जीवन की गतिविधियों से संबंधित होते हैं। अतः विद्यार्थियों को आकर्षित करते हैं, जिससे उनका ध्यान अधिगम के दौरान नियंत्रित रहता है।
- विद्यार्थी अपने दैनिक जीवन को इनकी गतिविधियों से जोड़ते हैं तथा विचार करने के लिए उत्साहित और प्रेरित होते हैं, जो प्रत्यक्ष रूप से कक्षा प्रबंधन के लिए आवश्यक होता है।
- विद्यार्थी अपने पूर्व-ज्ञान के आधार पर संवाद करना शुरू कर देते हैं जिससे विचारों का आदान-प्रदान होता है, जो कक्षा प्रबंधन को नियंत्रित करता है।
- विद्यार्थी कक्षा में ध्यान देने लगते हैं और अवधारणा-कार्टून में उनकी रुचि व उत्सुकता बढ़ जाती है।

काबापिनर (2005) ने अपने अध्ययन के माध्यम से इस तथ्य पर प्रकाश डाला है कि यदि अवधारणा-कार्टून के चरित्रों का नाम रख दिया जाए (जैसा कि हम चित्र 4 और चित्र 6 में देख रहे हैं) तो अवधारणा-कार्टून की प्रभावशीलता में वृद्धि हो जाती है और कक्षा प्रबंधन की समस्याओं में कमी आने लगती है।

निष्कर्ष

इस लेख में हमने प्राथमिक शिक्षा से संबंधित विद्यार्थियों में अवधारणा-कार्टून की उपयोगिता का सैद्धांतिक अध्ययन किया है। इस अध्ययन को सारगर्भित करने के लिए हमने अवधारणा-कार्टून से संबंधित चित्रों को भी शामिल किया है। इस सैद्धांतिक अध्ययन की जाँच-पड़ताल से कई सारे तथ्य प्रकाश में आए हैं। उन तथ्यों में मुख्यतः विद्यार्थियों में भाषा कौशल का विकास, उनकी एकाग्रता में वृद्धि, उनकी अपनी पाठ-सामग्री के प्रति रुचि, विद्यार्थियों के दिमाग में बनी गलत धारणाओं में सुधार इत्यादि जैसे आयाम शामिल हैं। इस अध्ययन के फलस्वरूप यह पाया गया है कि अवधारणा-कार्टून के प्रयोग से विद्यार्थियों में उनके तर्क-वितर्क करने, उनके संज्ञानात्मक-संघर्ष में प्रगति करने, उनके रचनात्मक आकलन को सही दिशा देने, उन्हें प्रेरित करने, उन्हें पठन-पाठन में व्यस्त रखने तथा उनके समस्या-समाधान कौशल आदि पर सकारात्मक प्रभाव पड़ा है, वहीं दूसरी तरफ़ शिक्षकों में उनके रचनावादी शिक्षण उपागम और विषय के अध्यापन का ज्ञान आदि में सुधार हुआ है। अवधारणा-कार्टून का प्रयोग विभिन्न विषयों में कैसे, कब और किस सीमा तक सफलतापूर्वक किए जा सकते हैं, इसका भी उल्लेख इस अध्ययन में मिलता है। ऊपर के सभी भाग तथा उनसे संबंधित चित्र यह साफ़ तौर पर दर्शाते हैं कि अवधारणा-कार्टून विद्यार्थी की शैक्षणिक प्रगति में सहायक होने के साथ-ही-साथ शिक्षक की शिक्षण रणनीतियों में सुधार करते हैं और उसे प्रभावी बनाते हैं। अवधारणा-कार्टून विद्यार्थियों के असाधारण और आश्चर्यजनक विकास को चिह्नित करता है। यह अध्ययन यह भी निश्चित करता है कि अवधारणा-कार्टून कक्षा को अनौपचारिक शिक्षा के क्षेत्र में परिवर्तित करने में मदद करता है तथा विद्यार्थियों को उनके मित्रों के साथ परस्पर संबंधों

में मधुरता लाता है। प्राथमिक शिक्षा के संदर्भ में अवधारणा-कार्टून की उपयोगिता इस बात को भी साबित करती है कि अन्य शिक्षण रणनीतियों की तुलना में अवधारणा-कार्टून की शिक्षण विधि, शिक्षक तथा विद्यार्थियों के आपसी संबंधों तथा लगाव को सकारात्मक मज़बूती प्रदान करती है। दूसरे शब्दों में, हम इस निष्कर्ष पर पहुँचने में सक्षम होते हैं कि कक्षा के वातावरण को रुचिकर, प्रभावी, परस्पर संवादात्मक और स्फूर्तिदायक बनाने के लिए अवधारणा-कार्टून का प्रयोग सहायक सिद्ध हुआ है। अवधारणा-कार्टून का प्रयोग विशेष तौर पर विज्ञान विषय के शिक्षण में ही अधिकतर किया गया है, लेकिन इस अध्ययन से यह पता चलता है कि विज्ञान विषय के साथ-साथ गणित तथा अन्य सामाजिक विषयों में भी अवधारणा-कार्टून का प्रयोग बड़ी सुगमता और सरलता से किया जा सकता है। शिक्षा के क्षेत्र में प्राथमिक शिक्षा के अलावा अन्य शिक्षा के स्तरों में अवधारणा-कार्टून की उपयोगिता पर गहन शोध की आवश्यकता है।

संदर्भ

अरुनराज, टी. और टी. ब्लेसी. 2015. कार्टून इन ओवर कमिंग अटेंशन डिफ़िक्ट हाइपर एक्टिव डिसऑर्डर (एडीएचडी). *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ रिसर्च एंड रिव्यू.* 2(1), पृ.सं. 15–19.

इकिसी, एफ़., ई. इकीसी और एफ़. आयदिन. 2007. यूटिलिटी ऑफ़ कॉन्सेप्ट कार्टून्स इन डायग्नोसिंग एंड ओवरकमिंग मिसकॉन्सेप्शन रिलेटेड इन फ़ोटोसिंथेसिस. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ एनवायरमेंटल एंड साइंस एजुकेशन.* 2(4), पृ.सं. 111–124.

काबापिनर, एफ़. 2005. इफ़ेक्टिवनेस ऑफ़ टीचिंग वाया कॉन्सेप्ट कार्टून्स फ़्रॉम द पॉइंट ऑफ़ व्यू ऑफ़ कंस्ट्रकटिव एप्रोच. *एजुकेशनल साइंसेज— थ्योरी एंड प्रैक्टिसेज.* 5(1), पृ.सं. 136–146.

काराहान, ए. और सी.के. कागानाका. 2017. क्लासरूम मैनेजमेंट विथ कॉसेप्ट कार्टून्स. *ओपन एक्सेस लाइब्रेरी जर्नल,* 4, 3919.

कुसुमनिंग्रम आई. ए., ए. अशादी. और एन.वाई. इंद्रियती. 2018. कॉसेप्ट कार्टून्स फ़ॉर डायग्नोसिंग स्टूडेंट्स मिस्कांसेप्शंस इन दी टॉपिक ऑफ़ बफ़र्स. *जर्नल ऑफ़ फिजिक्स कॉन्फ़्रेंस सीरीज.* 1022(1), 012036.

केओघ, बी. और एस. नायलर. 1999. कॉन्सेप्ट कार्टून्स, टीचिंग एंड लर्निंग इन साइंस— एन इवैल्यूएशन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ साइंस एजुकेशन.* 21(4), पृ.सं. 431–446.

क्रोएहनर्ट, जी. 1999. *101 ट्रेनिंग गेम्स.* मैकग्रा-हिल कंपनी, सिडनी, ऑस्ट्रेलिया.

गैमेज, एस. 2019. कार्टून्स ऐज ऑथेंटिक सप्लीमेंटरी टीचिंग टूल इन इंग्लिश ऐज ए सेकंड लैंग्वेज क्लासरूम्स. *एडवांसेस इन लैंग्वेज एंड लिटररी स्टडीज.* 10(1), पृ.सं. 107–116.

चीन, सी. और एल. टियो. 2009. यूजिंग कॉन्सेप्ट कार्टून्स इन फ़ार्मेटिव असेसमेंट स्कैफोलडिंग स्टूडेंट्स अर्गुमेंटेशन. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ साइंस एजुकेशन.* 31(10), पृ.सं. 1307–1332.

योंग, सी.एल. और जेड. की. 2017. युटिलायिंजिंग कॉन्सेप्ट कार्टून्स टू डायग्नोज एंड रीमेडिएट मिस्कांसेप्शंस रिलेटेड टू फ़ोटोसिंथेसिस अमंग प्राइमरी स्कूल स्टूडेंट्स. *ओवरकमिंग स्टूडेंट्स* मिस्कॉन्सेप्शंस *इन साइंस.* पृ.सं. 9–27.

सज़ाना, सी. 2018. कार्टून इन लैंग्वेज इन टीचिंग एंड लर्निंग. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ प्योर एंड एप्लाइड मैथमेटिक्स.* 119 (12), पृ.सं. 2435–2448.

हैंक्स, पी. 1988. द *कोलिंस कानसाइज़ इंग्लिश डिक्शनरी— सेकंड एडिशन.* पब्लिशर हार्पर कोलिंस. लंदन.